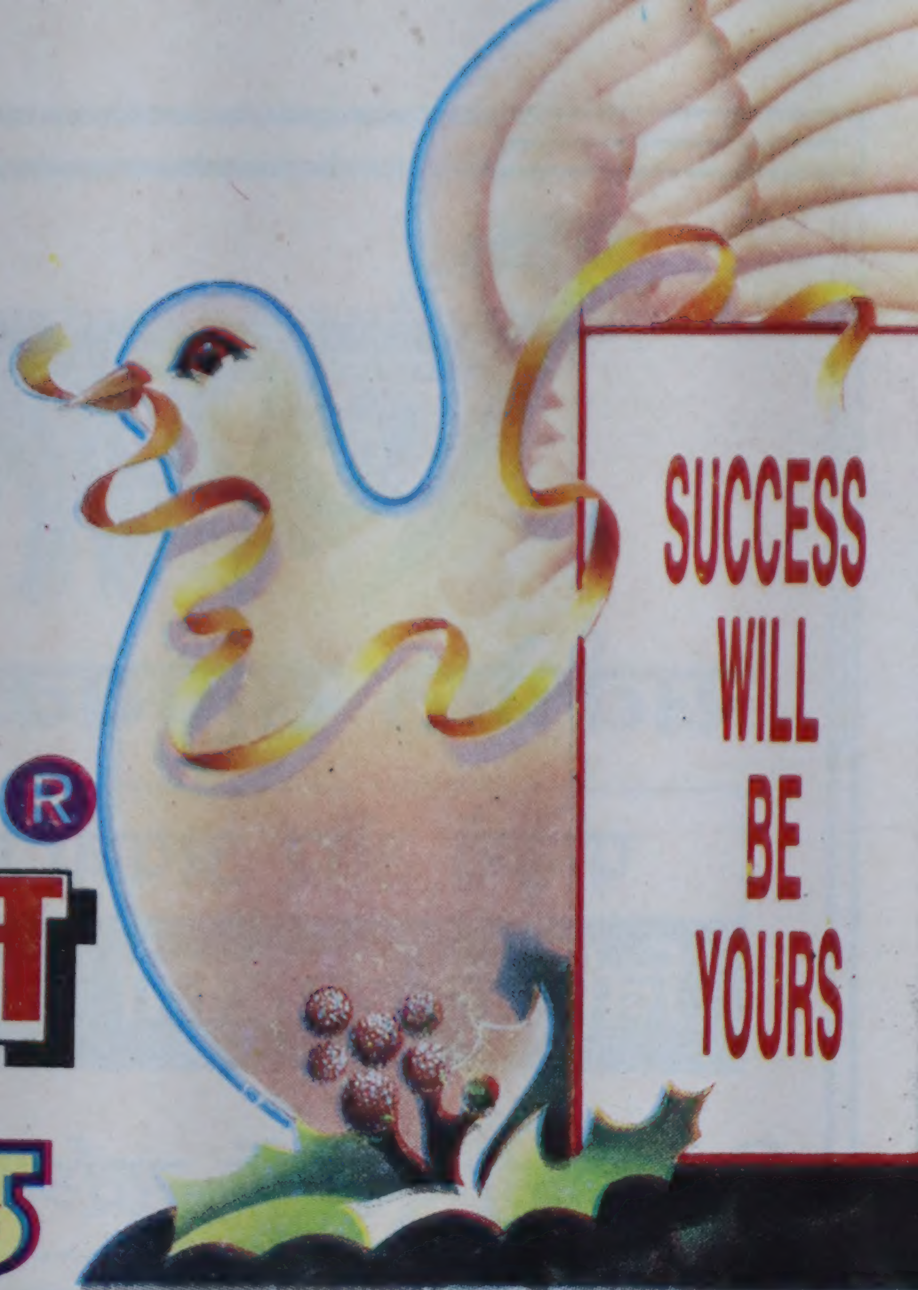




विमल®
सर्वश्रेष्ठ दीपिका

अग्नि पथ

(कक्षा 11 के लिए)











विमल®

सर्वश्रेष्ठ दीपिका

अग्नि पथ

(कक्षा 11 के लिए)







कक्षा 11 के नये एक वर्षीय पाठ्यक्रमानुसार

विमल®

सर्वश्रेष्ठ दीपिका

अग्निपथ

(महेन्द्र जैन)

कक्षा 11 के लिए

(नई पाठ्यपुस्तक अनुसार)

विशेषतायें :

- कम कीमत, अधिक मैटर
- दीपिका विषय के अनुभवी व्याख्याताओं द्वारा लिखित
- दीपिका पर बढ़िया व आकर्षक कवर
- दीपिका में पाठ्यपुस्तक का सम्पूर्ण हल
- आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा मुद्रित

नवीन संस्करण] [मूल्य : 22.00 रुपये

विषय-सूची

अग्नि पथ

नाटककार-परिचय

नवोन्मेष के हिन्दी लेखकों में श्री महेन्द्र जैन का महत्त्वपूर्ण स्थान है । श्री जैन वर्तमान हिन्दी साहित्य में लेखक, नाटककार और पत्रकार हैं । श्री जैन का जन्म राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले के ग्राम भगवतगढ़ में 15 जुलाई, 1939 को हुआ । इनके पिता श्री नाथूलाल जैन 'जिज्ञासु' एक आदर्श शिक्षक, लेखक, कवि एवं मनीषी-चिन्तक थे, जिनकी प्रेरणा पाकर इन्होंने छोटी उम्र में ही कविताएँ, कहानी आदि लिखना प्रारम्भ कर दिया तथा छात्र जीवन पूरा होने तक अनेक पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं ।

श्री जैन ने एक लेखाकर्मी के रूप में राज्य-सेवा प्रारम्भ की, किन्तु इनकी रुचि एवं रुझान सदैव अध्ययन, लेखन व सृजन में रहा । सेवाकाल में ही इन्होंने हिन्दी एवं पत्रकारिता विषयों में स्नातकोत्तर उपाधियाँ अर्जित कीं । सन् 1968 से हिन्दी के प्रतिनिधि कथा मासिक "कथालोक" के मानद सम्पादक रहे । इनके सम्पादन कौशल से चार वर्षों में ही "कथालोक" ने राजस्थान की साहित्यिक पत्रिकाओं में अपनी पहचान बना ली । इसी क्रम में श्री जैन ने "राजस्थान के लोकतीर्थ", "वन्दे मातरम्", "आस्था" आदि लगभग 150 छोटे-बड़े ग्रन्थों का सम्पादन किया । सन् 1985 में राजस्थान सरकार ने इनको ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग द्वारा प्रकाशित "राजस्थान विकास" मासिक पत्र के सम्पादन का कार्य विशेष रूप से सौंपा । कुछ ही वर्षों में "राजस्थान विकास" की गणना उत्कृष्ट सरकारी पत्रों में होने लगी ।

भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं उच्चस्तरीय साहित्य के अध्येता श्री महेन्द्र जैन की प्रकाशित कृतियों में तीन पूर्णांकी नाटक—"अहोदानम्", "सत्य के छोर" तथा "अग्नि-पथ", तीन लघु कथा संग्रह—"घर-गृहस्थी", "बेचारा आदमी" तथा "दूध और पूत" एवं लगभग एक दर्जन अन्य पुस्तिकाएँ हैं । कतिपय कृतियाँ अप्रकाशित हैं । राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा इनकी कृति "सत्य के छोर" को वर्ष 1996-97 में श्रेष्ठ नाट्यकृति के रूप में देवीलाल सामर पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है ।

अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़े श्री महेन्द्र जैन की अनेक वार्ताएँ, कथाएँ आदि आकाशवाणी और दूरदर्शन पर प्रसारित होती रहती हैं तथा ये निरन्तर लेखन में प्रवृत्त हैं । नाटक लेखन में श्री जैन की विशेष रुचि है । ये मानते हैं कि एक मात्र नाटक ही ऐसी साहित्यिक विधा है जो मानव जीवन को सहज-सरल ढंग से सुखी और आनन्दमय बना सकती है, क्योंकि हृदय और मन पर नाटक का स्थायी प्रभाव होता है ।

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	—	प्रखर स्वतन्त्रता सेनानी, नाटक के नायक।
शरत्चन्द्र बोस	—	सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई, विभावती देवी के पति।
देशबन्धु चितरंजनदास	—	नेताजी के राजनैतिक गुरु, स्वतन्त्रता सेनानी।
डॉ. पंचानन	—	नेताजी के भक्त, सरकारी चिकित्सक।
शिशिर कुमार	—	नेताजी के भतीजे, शरत्चन्द्र बोस के पुत्र।
अकबर शाह, उत्तमचन्द	—	राष्ट्र के प्रति निष्ठावान नेताजी सहयोगी।
ए.सी. नाम्बियार, एन. जी. गणपुले	—	बर्लिन स्थित "स्वतन्त्र भारत केन्द्र" में नेताजी के सहयोगी।
रासबिहारी बोस	—	ब्रिटिश सरकार द्वारा निष्कासित क्रान्तिकारी।
मेजर आबिद हसन	—	नेताजी के निजी सहायक/विशिष्ट सहयोगी।
एस.ए. अय्यर	—	"अस्थायी आजाद हिन्द सरकार" के प्रचार मंत्री।
कर्नल हबीबुर्रहमान मे. ज. कियानी	—	"आजाद हिन्द सेना" के उच्चाधिकारी।
चारुचन्द्र, क्रान्ति डे, हेमेन्द्र घोष, मनीन्द्रराय	—	क्रांतिकारी स्वतन्त्रता सेनानी, नेताजी के सहयोगी।
अन्य	—	अधिकारी, मजिस्ट्रेट, जनता, जेलर, विद्यार्थी, प्यारासिंह, दरबारासिंह, थांग (कर्मचारीगण), हबीब साहब, श्रीमती हबीब (देशभक्त दानी), मि. धर (गुप्तचर अधिकारी) आदि।

महिला-पात्र

विभावती देवी	—	नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मझली भाभी (मेजबऊ दीदी)
वासंती देवी	—	देशबन्धु चितरंजनदास की पत्नी, स्वतन्त्रता सेनानी
कमला देवी	—	(कमला देवी चट्टोपाध्याय) स्वतन्त्रता सेनानी।
इला	—	नेताजी की भतीजी, शरतचन्द्र बोस की पुत्री
एमिली	—	श्रीमती एमिली बोस, नेताजी की धर्मपत्नी।
केप्टन डॉ. लक्ष्मी	—	रानी झाँसी रेजीमेंट की कप्तान।
कमाण्डर थीवर्स	—	रानी झाँसी रेजीमेंट की कमांडर।

नाटक का विस्तृत कथानक (सार)

अंक-1 (दृश्य-1)

प्रथम अंक के प्रथम दृश्य का प्रारम्भ कलकत्ता में शरत्चन्द्र बोस के घर से होता है। शरत्चन्द्र बोस सुभाष चन्द्र बोस के अग्रज हैं तथा विभावती शरत्चन्द्र बोस की पत्नी है। विभावती अपने घर में गृहकार्य में व्यस्त रहती है तथा चारूचन्द्र ''वन्दे मातरम्'' की धुन के साथ दरवाजा खटखटाता है। विभावती दरवाजा खोलकर उसे अन्दर ले जाती है।

चारूचन्द्र को प्रसन्नता है कि सुभाष ने आई.सी.एस. पास कर ली है। विभावती उसे जलपान करवाती है। वे आपस में सुभाष के बारे में बातें करते हैं। विभावती पत्रों के माध्यम से सुभाष के बारे बतलाती है कि—सुभाष अभी अपने भविष्य के बारे में कोई निर्णय नहीं कर रहा है। चारूचन्द्र कहता है कि रामकृष्ण व अरविन्द में उनकी आस्था है। विभावती कहती है कि गीता का कर्मयोग व विवेकानन्द का आत्मविश्वास उनका संबल है। विभावती बतलाती है कि सुभाष देश सेवा के कार्य को नौकरी से अधिक महत्त्व देता है।

कुछ समयोपरान्त शरत्चन्द्र आ जाते हैं। वह भी सुभाष के बारे में ही बात करते हैं। सुभाष ने अपने पत्र में लिखा कि अनेक व्यक्तियों ने अपने कार्य छोड़कर देश सेवा के कार्य को अपनाया है। वह भी देशसेवा के लिए सर्वस्व त्याग करने को तैयार है। यद्यपि सरकारी अधिकारी मांटेक्यू चाहता है कि सुभाष सरकारी नौकरी में ही रहे, किन्तु वह स्वतन्त्र ही रहना चाहते हैं। चारूचन्द्र चला जाता है।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–सुभाषचन्द्र बोस आई.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त भी सरकारी नौकरी न करके देश सेवा करने का ही दृढ़ निश्चय करते हैं।

दृश्य-2

प्रथम अंक के द्वितीय दृश्य का प्रारम्भ कलकत्ता में देशबन्धु चितरंजनदास के घर से होता है। समय तीसरा प्रहर है तथा जुलाई, 1921 है।

सुभाष आई.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण कर भारत आ गये हैं। सुभाष भारत में आकर सबसे पहले महात्मा गाँधी से मिले। महात्मा गाँधी को देखकर वे बहुत प्रभावित हुए। उस समय महात्मा गाँधी 'बम्बई' में 'मणि भवन' में रह रहे थे। महात्मा गाँधी से मिलते समय सुभाष विदेशी वेशभूषा में थे, इसलिये गाँधीजी के समक्ष लज्जित हुए।

गाँधीजी से मिलने के उपरान्त, सुभाष देशबन्धु चितरंजनदास से मिलते हैं। दोनों आपसी बातचीत में स्वतन्त्रता आन्दोलन को गतिमान बनाने के बारे में विचार करते हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी आन्दोलन को तेज करना चाहते थे। सुभाष ने देशबन्धु को बतलाया कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों के साथ अन्याय व अनाचार करती है।

देशबन्धु सुभाष को 'नेशनल कॉलेज' की देखरेख करने के लिये कहते हैं। इस कॉलेज में राष्ट्रवादी छात्र या अन्य कॉलेजों से निकाले गये छात्र ही अध्ययन करते हैं। देशबन्धु ने सुभाष को कांग्रेस का सदस्य बनने के लिये भी कहा क्योंकि कांग्रेस ही सम्पूर्ण राष्ट्र में चेतना, जागरण का एक मात्र अखिल भारतीय मंच है।

देशबन्धु ने गाँधीजी के बारे में बतलाया कि गाँधीजी का चरित्र सामान्य से भिन्न है। गाँधी अपने उदात्त आचरण तथा शत्रु के प्रति विनम्र व्यवहार के साथ-साथ सुदृढ़ संकल्प लेकर कठोर से कठोर परिस्थिति में भी आश्चर्य ढंग से आन्दोलन का नेतृत्व करते हैं।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–सुभाष ने आई.सी.एस. की नौकरी से त्यागपत्र दिया। देशबन्धु चितरंजन की प्रेरणा से देशभक्ति के कार्य में लगना। स्वतन्त्रता आन्दोलन को गतिशील बनाने का संकल्प। सुभाष सशस्त्र क्रान्ति द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाने के पक्ष में।

दृश्य-3

प्रथम अंक के तृतीय दृश्य का प्रारम्भ देशबन्धु चितरंजन के आवास से प्रारम्भ होता है। समय प्रातःकालीन। काल सन् 1924। देशबन्धु चितरंजनदास महात्मा गाँधी के सत्याग्रह के अहिंसात्मक आन्दोलन से असन्तुष्ट हैं। वे जानते हैं कि सत्याग्रह से स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं की जा सकती। सिद्धान्त, आदर्शवाद और अनशन के प्रयोगों से उनका विश्वास उठ गया है। वे देश में युवा-शक्ति से कार्य लेना चाहते हैं।

वासन्ती देवी बतलाती है कि देश में साम्प्रदायिक दंगे भड़क रहे हैं। सरकार अत्याचार कर रही है। कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन में पार्टी को अच्छी सफलता मिली। सुभाषचन्द्र बोस की देखरेख में कलकत्ता महानगर का कायाकल्प हुआ। पटना नगर निगम में राजेन्द्र प्रसाद, इलाहाबाद में जवाहरलाल, बम्बई में विट्ठल भाई और अहमदाबाद में बल्लभ भाई पटेल महापौर चुने गये।

गोपीनाथ साहा को सरकार ने फाँसी पर लटका दिया था। सुभाषचन्द्र बोस व देशबन्धु स्वतन्त्रता आन्दोलन को गतिशील बनाने पर विचार कर रहे हैं। देशबन्धु सुभाष के राजनैतिक पथ-प्रदर्शक हैं, उन्हें विश्वास है कि सुभाष उनके बताये कार्यों को अवश्य निष्ठा से पूरा करेगा। सुभाष कलकत्ता नगर निगम योजनाओं के बारे में भी सोचते हैं।

क्रान्ति डे का आगमन होता है। क्रान्ति डे बतलाता है कि सन् 1818 के कानून के अन्तर्गत सरकारी पुलिस ने सुभाष को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने सुभाष के घर की तलाशी भी ली। देशबन्धु सरकार के नाम पत्र लिखवाते हैं। उन्होंने बताया कि सरकार स्वयं आतंकवाद फैलाती है। वे सुभाष के बारे में चिन्तित हैं।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–देशबन्धु व वासन्ती देवी के मध्य देश की स्थिति पर विचार करना। सुभाष चन्द्र बोस कलकत्ता के महापौर बने। सन् 1818 के कानून के अन्तर्गत सुभाष की गिरफ्तारी। देशबन्धु ने डिप्टी कमिश्नर को सरकार के अत्याचारों की जानकारी दी।

अंक-2 (दृश्य-1)

स्थान–कलकत्ता की प्रेसीडेन्सी जेल।

समय–सन् 1940 की घटना।

भारत सुरक्षा अधिनियम की धारा 129 के अन्तर्गत कलकत्ता की प्रेसीडेन्सी जेल में सुभाष को बन्दी बना लिया गया। जेल में सुभाष 'गीतान्जलि' की कविता गुनगुना रहे हैं।

सुभाष के मस्तिष्क में 'भारत माँ को दासता की जंजीरों' से मुक्त कराने का विचार बड़ी तीव्रता से आता है। द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। इसी समय मनीन्द्र राय आते हैं। दादा हेमेन्द्र घोष भी आते हैं। मनीन्द्र राय कहते हैं कि "कांग्रेस में दो ही आधुनिकतावादी हैं—जवाहरलाल नेहरू तथा सुषाषचन्द्र बोस। हेमेन्द्र घोष कहते हैं कि भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये दो मार्ग हैं। गाँधीजी सत्य व अहिंसा का मार्ग अपनाते हैं तथा कुछ नेता लोग क्रान्तिकारी हैं। विचारों में भिन्नता होते हुए भी सुभाष गाँधी के विचारों का सम्मान करते हैं।

मनीन्द्र राय कहते हैं कि सुभाष को जेल से छोड़ दिया जायेगा, परन्तु जेलर कहता है, कि उन्हें 'आजीवन कारावास' ही दिया गया है। सुभाष जेल से निकलने की युक्ति सोचते हैं। मनीन्द्र राय उन्हें अनशन करने का सुझाव देते हैं। सुभाष सोचते हैं, कि किसी भी प्रकार जेल से निकलकर विदेशी भारतीयों की मदद ली जावे। बाहरी मदद से ही मुक्ति मिलती है। वे काली माँ को प्रणाम करते हैं तथा भारत की मुक्ति के लिये आशीर्वाद माँगते हैं।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–प्रेसीडेन्सी जेल में सुभाष द्वारा अनशन करने का निश्चय।

दृश्य-2

स्थान प्रेसीडेन्सी जेल की कोठरी। समय 1940, जेल की कोठरी में सुभाष वज्रासन में बैठे हैं। वे सोचते हैं कि दुःखों के सागर से ही पुरुषार्थ जन्म लेता है। इसी समय डॉक्टर पंचानन आते हैं। पंचानन सुभाष को विश्राम करने की सलाह देते हैं। सुभाष कहते हैं कि अंग्रेज अत्याचार कर रहे हैं। वे सुभाष का अनशन तुड़वाने का प्रयास करते हैं। डॉक्टर पंचानन जेलर से कहते हैं कि सुभाष का स्वास्थ्य काफी गिर गया है, परन्तु उनमें अटूट आत्मबल और आत्मविश्वास है। जेलर और डॉक्टर पंचानन आपस में सुभाष के स्वास्थ्य के बारे में बातचीत करते हैं। डॉक्टर पंचानन जेलर को बतलाते हैं, कि आजकल सुभाष बाबू संन्यासी हो गये हैं। वे विवेकानन्द के समान लगते हैं। दिनभर भगवान की पूजा-अर्चना ही करते रहते हैं। जेलर सुभाष को अनशन तोड़ने के लिये कहता है, परन्तु सुभाष अपने निश्चय पर अडिग है। जेलर सरकार को रिपोर्ट देने के लिये चला जाता है।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–जेलर द्वारा सुभाष का अनशन तुड़वाने का विफल प्रयास।

दृश्य-3

स्थान–कलकत्ता में शरत्‌चन्द्र बोस का घर।

समय–जनवरी, 1941।

सुभाष चन्द्र बोस को प्रेसीडेन्सी जेल से छोड़ दिया जाता है तथा उन्हें उनके ही घर एलगिन रोड़ पर नजरबन्द कर दिया जाता है। सुभाष अपने घर के कमरे में शान्ति से बैठे हैं। उसी समय उनकी भाभी विभावती आती है। वह कहती है कि सुभाष पूरे संन्यासी बन गये हैं। वे किसी से भी नहीं मिलते। सुभाष अपनी भाभी से कहते हैं कि वे अब भारत की

स्वतन्त्रता के लिये काली माँ की उपासना करते हैं । इसी समय उनकी भतीजी इला प्रवेश करती है । वह कहती है कि घर के बाहर सभी को यह मालूम हो गया है कि सुभाष संन्यासी हो गये हैं । गुप्तचरों पर भी उनका प्रभाव है ।

सुभाष घर से निकलना चाहते हैं । घर से निकलने के लिये वे योजना बनाते हैं । इसी समय शिशिर प्रवेश करता है । मियाँ अकबर शाह भी एक नृत्य महिला के वेश में अन्दर आते हैं । अकबर शाह पेशावर फारवर्ड ब्लाक के नेता हैं । अकबर शाह वतन के लिये सब कुछ करने को तैयार रहता है । वह कहता है कि 27 जनवरी से पहले ही आपको घर छोड़ देना है ।

शिशिर सुभाष से कहता है—"हम रात्रि को कार द्वारा घर से निकलेंगे । आप (सुभाष) पेशावर जाने वाली ट्रेन में बैठेंगे । चाचा अकबर और भगतराम पेशावर स्टेशन पर मिलेंगे । वे ही काबुल के रास्ते आपको मास्को पहुँचाने की व्यवस्था करेंगे जहाँ से आप जर्मनी की राजधनी बर्लिन पहुँचेंगे ।"

शिशिर सुभाष को घर से निकलने की युक्ति भी बताता है । वह कहता है कि उन्हें (सुभाष को) बीमा कम्पनी का ट्रेवलिंग एजेन्ट मोहम्मद जियाउद्दीन बनना होगा । उन्हें इला से कुछ पठानी वार्तालाप भी सीखना होगा । सब चले जाते हैं । सुभाष संतोष की गहरी साँस लेता है ।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु—कलकत्ता में सुभाष अपने घर में नजरबन्द । वहाँ से निकलने की युक्ति पर विचार करना ।

दृश्य-4

स्थान—कलकत्ता में शरत्चन्द्र बोस का घर ।

समय—14 से 16 जनवरी, 1941 ।

सुभाष अपने कक्ष में लेटे हुए हैं, उन्होंने अपने चेहरे को पुस्तक से ढक रखा है । शरत्चन्द्र और सुभाष आपस में बातचीत करते हैं । वे कांग्रेस की शान्ति की नीति से असन्तुष्ट हैं । वे गाँधीजी की नीति का पूर्णतया समर्थन नहीं करते हुए भी उनका आदर करते हैं । इसी समय शिशिर प्रवेश करता है । वह सुभाष को निकलने की युक्ति बतलाता है । सुभाष चन्द्र किसी से भी बातचीत नहीं करते व किसी से भी नहीं मिलते । पर्दे के नीचे से खाने की थाली सरका दी जाती है ।

शिशिर मनीन्द्र के साथ प्रवेश करता है । सुभाष अन्दर पठानी वेश धारण कर लेते हैं । भूरे रंग की शेरवानी, ढीला पायजामा,······लम्बी घनी दाढ़ी-मूँछें, आँखों पर गहरे रंग का चश्मा······पैरों में पम्प शू······आदि । सुभाष मोहम्मद जियाउद्दीन के रूप में घर से बाहर निकल जाता है ।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु—सुभाष द्वारा क्रान्ति का मार्ग अपनाना । सुभाष छद्म वेष में घर से बाहर निकल जाते हैं ।

अंक-3 (दृश्य-1)

स्थान–जर्मनी की राजधानी बर्लिन के एक्सेल्सियर होटल का कमरा ।

समय–सन् 1941 ।

सुभाष कलकत्ता से पेशावर होते हुए जर्मनी पहुँचे । वहाँ सरकार ने उन्हें इटली के राजनयिक 'ओरलेण्डो मेजोट्टा' छद्म के नाम से उन्हें बर्लिन के इस शानदार होटल में ठहराया था । होटल में जर्मनी गुप्तचरों का जाल बिछा है ।

सुभाष कुछ लिखने में व्यस्त हैं । उसी समय एमिली प्रवेश करती है । एमिली से सुभाष भावपूर्ण भाषा में वार्तालाप करते हैं । वह नर्स बनकर उनसे मिलने आई थी । एमिली डाकतार विभाग में है तथा दो दिन व रात घायल सैनिकों की देख-भाल भी करती है । सुभाष ने बताया कि भारत छोड़ने के दस दिन बाद ही उसके फ़रार होने की सूचना दी गई थी । कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं को भी सुभाष के जाने की सूचना मिल गई थी परन्तु उनके फरार होने का दोषारोपण सरकार पर ही लगाया गया ।

सुभाष और एमिली के बीच घनिष्ठतापूर्ण वार्तालाप होता है । एमिली सुभाष से कहती है कि तुम मानवता के मसीहा हो । आजादी के प्रहरी तथा मातृभूमि के अनमोल लाल हो । एमिली भाव विभोर हो जाती है । दोनों नाश्ता करते हैं । इसी समय मि. रिबेन ट्राप सुभाष से फोन पर बात करते हैं ।

सुभाष हिटलर से मित्रता करना चाहते हैं । एमिली बताती है कि हिटलर के यहाँ सिद्धान्त और आदर्श नहीं चलते । वह बड़ा ही क्रूर है । एमिली सुभाष को एक संगठन बनाने की प्रेरणा देती है । सुभाष कहते हैं कि आजाद हिन्द सरकार, आजाद हिन्द रेडियो, शीघ्र ही अपना काम प्रारम्भ कर देंगे ।

एमिली चली जाती है । सुभाष भारी हृदय लिये मौन हो जाते हैं ।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–होटल में सुभाष की एमिली से बातचीत ।

दृश्य-2

स्थान–बर्लिन में 'स्वतन्त्र भारत केन्द्र' का सभा कक्ष ।

समय–अक्टूबर-नवम्बर, 1941 ।

सुभाष बर्लिन में स्वदेशी दूतावासों के भवन में है । यह भवन दो मंजिला है । 6-सोफिन ट्राश । इसी भवन में 'स्वतन्त्र भारत केन्द्र' का कार्यालय है । सुभाष भारत माँ की वन्दना करते हैं । इसी समय एमिली शैंकल आती है तशा उन्हें बधाई देती है । वह एक पत्र पढ़कर सुनाती है । उसने बताया कि रेडियो से समाचार दिया गया है कि सुभाष जिन्दा है । सुभाष ने स्वयं ही रेडियो से अपने बारे में समाचार दिया है ।

इसी समय एन.सी. नाम्बियार, एन.जी. गणफुले, एम.आर. व्यास, आबिद हसन तथा **कान्ताराम प्रवेश** करते हैं । नाम्बियार बतलाते हैं मि. मैजोट्टा ही वास्तव में सुभाष है । सब

मिलकर भारत माता के चित्र पर पुष्प भेंट करते हैं । नेताजी झण्डा फहराते हैं तथा राष्ट्रगीत गाते हैं । सुभाष स्वतन्त्र भारत केन्द्र, इण्डियन लीजन तथा आजान्द हिन्द रेडियो के कार्यक्रम के बारे में बतलाते हैं । सुभाष सभी को 'जयहिन्द' का नारा तथा मन्त्र देते हैं । वह हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर भी बल देते हैं ।

आबिद हसन कहता है कि नेताजी ने हमें पाँच बहुमूल्य वरदान दिये हैं । पहला जयहिन्द का मन्त्र, दूसरा तिरंगा झण्डा जिसमें छलांग लगाता हुआ शेर अधिचिह्न के रूप में अंकित है, तीसरा जन-गण-मन वाला गीत, चौथा गाँधीजी को 'राष्ट्रपिता' का सम्बोधन, पाँचवा राष्ट्रभाषा हिन्दी ।

वहाँ उपस्थित सभी लोगों को सुभाष ने भारत माता को स्वतन्त्र कराने के लिये सहयोग देनें के लिये कहा । सभी ने खड़े होकर स्वतन्त्रता के लिये पूरा सहयोग देने का वायदा किया । अन्त में उपस्थित सभी लोगों ने वन्दे मातरम् गीत गाया । एमिली ने सुभाष को 'जय हिन्द' कहते हुए बधाई दी ।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–सुभाष अपने साथियों को भारत स्वतन्त्र कराने सम्बन्धी कार्यों की जानकारी देते हैं ।

दृश्य-3

स्थान–'स्वतन्त्र भारत केन्द्र' ।

समय–जनवरी, 1943 ।

'स्वतन्त्र भारत केन्द्र' का सभा कक्ष । 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस मनाने की तैयारी की जा रही है । छोटे-छोटे तिरंगे झण्डों की वंदनवारें चारों ओर लगी हैं । सुभाष चन्द्र देश की वर्तमान स्थिति तथा अंग्रेजी शासन के कुप्रभाव के बारे में चिन्तन करते हैं । उनके द्वारा निर्मित हिन्द सेना में अनेक व्यक्ति भर्ती हो गये थे । इसी समय आबिद हसन और नाम्बियार प्रवेश करते हैं ।

नाम्बियार कहते हैं कि जर्मनी में नेताजी की काफी मदद की । इटली और जापान भी हमारे सहयोगी बने । उधर गाँधीजी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया । सारे हिन्दुस्तान में लोग अंग्रेजों के विरुद्ध हो गये । चारों तरफ क्रान्ति होने लगी ।

रास बिहारी बोस ने कहा—एक राष्ट्र भारत, एक शत्रु इंग्लैण्ड और एक ही लक्ष्य स्वाधीनता । इसी समय जापान के प्रधानमन्त्री तोजो ने भी घोषणा की—'इण्डिया फार द इण्डियन्स ।' सुभाष भारत आना चाहते हैं । सुभाष देश के बारे में विचार करते हैं, उधर मोहम्मद जिन्ना भारत के टुकड़े कर पाकिस्तान बनाना चाहता है ।

सुभाष एमिली शैंकल से विवाह कर लेते हैं, क्योंकि वह देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में उनके साथ आदर्श भारतीय नारी के समान सहयोग देती है । उनके एक पुत्री भी होती है । सुभाष अपने विवाह की सूचना अपने पूजनीय मेज दादा को देते हैं ।

सुभाष अपनी यात्रा पर रवाना होते हैं तथा अपना नाम मि. मत्सूदा रखते हैं। सुभाष एमिली को अपने लक्ष्य से अवगत कराते हैं। एमिली उन्हें सफलता की शुभ कामनाएँ देती है।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–सुभाष व एमिली का विवाह होना। भारत को स्वतन्त्र कराने के लिये सुभाष का किसी गुप्त यात्रा पर प्रस्थान करना।

अंक-4 (दृश्य-1)

स्थान–सिंगापुर के कैथे सिनेमा हॉल का मंच।

समय–21 अक्टूबर, 1943।

एस.ए. अय्यर तथा आबिद हसन आपस में बातें कर रहे हैं। अन्तरिम आजाद हिन्द सरकार का घोषणा-पत्र तैयार किया जा रहा है। सुभाष जापानी हवाई जहाज से सिंगापुर पहुँचते हैं। सभी व्यक्ति नेताजी का स्वागत करते हैं। डॉ. लक्ष्मी महिलाओं का मोर्चा संभाले हुए है।

रास बिहारी बोस माइक पर 'आजाद हिन्द संघ' तथा 'आजाद हिन्द सेना' के बारे में जानकारी देते हैं। सुभाष 'अस्थाई स्वाधीन हिन्द सरकार' की स्थापना का घोषणा-पत्र बतलाते हैं।

"आजाद हिन्द सरकार" अपने समस्त नागरिकों को धार्मिक स्वाधीनता और समान अवसर का अधिकार देती है। यह सरकार सम्पूर्ण भारतवर्ष और उसके समस्त भू-भाग के निवासियों को सुख-समृद्धि प्रदान करने तथा विदेशी सरकार द्वारा खोदी गयी भेद भाव की खाई को पाटने का संकल्प करती है।"

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस 'अस्थायी आजाद हिन्द सरकार' के राष्ट्राध्यक्ष व प्रधानमंत्री मनोनीत किये जाते हैं। सुभाष अपने पद की शपथ ग्रहण करते हैं। इसके साथ ही अन्य मंत्रियों का चुनाव होता है। सभी मंत्री अपने पद की शपथ लेते हैं। सारा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज जाता है। डॉ. लक्ष्मी की अध्यक्षता में 'महिला रेजीमेन्ट' बनाई जाती है जिसका नाम "रानी झाँसी रेजीमेन्ट" रखा जाता है। महिलायें अपने रक्त से बलिदान-पत्र पर हस्ताक्षर करती हैं।

सभी समवेत स्वर से जय हिन्द करते हैं। वन्दे मातरम् गाया जाता है।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–

(1) अस्थायी आजाद हिन्द सरकार का गठन।

(2) सुभाष राष्ट्राध्यक्ष व प्रधानमंत्री मनोनीत।

(3) रानी झाँसी महिला रेजीमेन्ट की स्थापना।

दृश्य-2

स्थान–आजाद हिन्द सरकार का रंगून स्थित मुख्यालय।

समय–सन् 1944।

रंगून के कार्यालय में सुरक्षा प्रहरी दरबारा सिंह तथा सेवक प्यारासिंह हैं । दोनों मस्ती में गीत गाते हैं । प्यारासिंह कहता है कि हिन्द सेना कोहिमा प्रदेश में आगे बढ़ती हुई इम्फाल के निकट पहुँच गयी है । अण्डमान निकोबार द्वीप जापान ने भारत को दे दिया । अण्डमान द्वीप समूह को 'शहीद द्वीप समूह' तथा निकोबार द्वीप समूह को 'स्वराज द्वीप समूह' नाम दिया गया ।

सुभाष बैंकाक रेडियो से देशवासियों को संदेश देते हैं तथा सभी को 'दिल्ली चलो' का नारा देते हैं । आजाद हिन्द सरकार का आजाद हिन्द रेडियो पाँच स्थानों से बोलता है-- सिंगापुर, बैंकाक, रंगून, सैगोन और टोकियो ।

रंगून रेडियो से सुभाष महात्मा गाँधी के नाम संदेश प्रसारित करते हैं । सुभाष कहते हैं कि ब्रिटिश सरकार अहिंसा व नैतिकता से भारत नहीं छोड़ेगी । इसके लिये रुधिर की नदी में से निकलने को तैयार रहना होगा । वे कहते हैं कि—हे राष्ट्रपिता ! हम भारत के इस पवित्र मुक्ति युद्ध में आपका आशीर्वाद एवं शुभकामनायें चाहते हैं ।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–(1) आजाद हिन्द सेना की प्रगति ।

(2) अण्डमान व निकोबार में तिरंगा झण्डा फहराया ।

(3) रंगून रेडियो से सुभाष का महात्मा गाँधी के नाम संदेश प्रसारित करना ।

दृश्य-3

स्थान–रंगून स्थित आजाद हिन्द मुख्यालय का बाहरी भाग ।

समय–21 जनवरी, 1945 ।

बर्मा की राजधानी रंगून से भारतीय समाज द्वारा नेताजी के जन्म-दिवस पर विशाल जन सभा का आयोजन किया गया है । इस समारोह में आजाद हिन्द सरकार के मंत्रीगण, जापान और भारत के सैनिक अधिकारी भी भाग ले रहे हैं । अनेक स्त्री-पुरुष इस समारोह में आये हैं । नेताजी के चेहरे पर अपूर्व ओज है ।

प्यारासिंह, थाँग, हबीब, आबिद हसन आपस में नेताजी के अपूर्व त्याग एवं उत्साह की चर्चा करते हैं । श्रीमती हबीब रानी झाँसी रेजीमेन्ट में भर्ती होने का आग्रह करती है । अब्दुल भी नेताजी की फौज में भर्ती होना चाहता है । अब्दुल के सहयोग से बालसेना तैयार की जाती है । सभी व्यक्ति स्वतन्त्रता के लिये अपना-अपना योगदान देते हैं । मातायें एवं बहिनें भी अपना सहयोग देती हैं । एस.ए. अय्यर नेताजी से रंगून छोड़कर कहीं अन्यत्र जाने के लिये कहता है ।

सुभाष चन्द्र सैनिकों को तिरंगा झण्डा सदा ऊँचा रखने के उत्तेजनापूर्ण भाषण देते हैं । वे अनुशासन बनाये रखने के लिये कहते हैं ।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–(1) रंगून में नेताजी का जन्म-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है । (2) नेताजी को सभी व्यक्ति व महिलायें तन, मन, धन से सहयोग देने का वादा करते हैं । (3) नेताजी सभी को अनुशासन के साथ तिरंगे को ऊँचा ही रखने की प्रेरणा देते हैं ।

दृश्य-4

स्थान–सिंगापुर में 'आजाद हिन्द सरकार' का सभा-कक्ष।

समय–अगस्त, 1945।

सभाकक्ष में सुभाष विचारमग्न हैं। वे स्वतन्त्रता युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए व्यक्तियों के त्याग की प्रशंसा करते हैं। वे शहीदों को प्रणाम करते हैं।

इसी समय एस.ए. अय्यर, मेजर जनरल कियानी, अयगप्पन, ए.एन. सरकार तथा कर्नल हबीबुर्रहमान प्रवेश करते हैं।

अय्यर कहता है कि जापान अमेरिका के एटम बमों की आग में झुलस रहा है। रंगून से ब्रिटिश फौजें सिंगापुर की ओर जा रही हैं। रूस ने मंचूरिया को अपने अधिकार में ले लिया है।

सुभाष कहते हैं कि हमको जापान की तरह रूस भी हमारा मित्र है, भले ही वह जापान का शत्रु हो। कर्नल हबीब कहते हैं कि हमारी सेना हर चुनौतियों का सामना करने को तैयार है। जवानों ने पलायन करने से साफ इन्कार कर दिया है। वे वीर सैनिकों की भाँति बन्दी होना चाहते हैं। लड़कियाँ भी पलायन करना नहीं चाहती हैं।

रेजीमेन्ट की लड़कियाँ "झाँसी की रानी महारानी लक्ष्मी बाई का नाटक खेलती हैं।"

जापानी अधिकारी सूचना देता है कि जापानी सेनाओं ने मित्र राष्ट्रों के सामने समर्पण कर दिया है। वह कहता है कि यदि नेताजी चाहें तो जापान सरकार उन्हें सुरक्षित स्थान पर भेज सकती है। सुभाष जापानी अधिकारी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते हैं। वे इस बहाने सिंगापुर से मंचूरिया होते हुए मास्को पहुँच जायेंगे।

सुभाष अपने साथ हबीबुर्रहमान, कर्नल प्रीतमसिंह तथा गुलजारासिंह को ले जाना चाहते हैं। उसके बाद मेजर आबिद हसन तथा देवनाथ दास बैंकाक से उनके साथ हो जायेंगे। सिंगापुर के कार्य की देखभाल एम.जेड.कियानी करेंगे।

सुभाष सैनिकों को आदेश देते हैं—"मेरे प्यारे वीर जवानों। दिल्ली जाने के कितने ही रास्ते हैं और दिल्ली पहुँचना ही हमारा लक्ष्य है।"

सुभाष पूर्वी एशिया के प्रवासी भारतीयों के लिये भी संदेश देते हैं—

"इस अपूर्व संकट में, अपनी मातृभूमि की मुक्ति के लिये मुक्त हस्त से जो योगदान किया है, वह इतिहास में अवश्य लिखा जायेगा। अपनी इस अस्थायी विफलता से आप लोग निराश न हों। भारत स्वतन्त्र होगा और निकट भविष्य में होगा।" 'जय हिन्द'

यह संदेश देकर सुभाष अपने अज्ञात लक्ष्य और अभियान की ओर प्रस्थान कर जाते हैं।

अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु–सुभाष सिंगापुर से अज्ञात अभियान के लिये प्रस्थान करते हैं। जापानी सरकार उनकी मदद करती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

प्रश्न 1. "सुभाष शुद्ध मन का है, वह कोई भी ऐसा काम नहीं कर सकता जिससे देश का स्वाभिमान आहत हो।" ये विचार किसके हैं ?

(क) शरत्चन्द्र बोस (ख) देशबन्धु चितरंजनदास (ग) रवीन्द्रनाथ टौगोर

(घ) महात्मा गाँधी (ङ) जवाहरलाल नेहरू

उत्तर–(घ) महात्मा गाँधी।

प्रश्न 2. "आत्मोत्सर्ग से ही आत्मोद्धार सम्भव है।" यह आप्त वाक्य किस महापुरुष का है ?

(क) स्वामी विवेकानन्द (ख) महात्मा गाँधी (ग) रामकृष्ण परमहंस

(घ) महर्षि अरविन्द (ङ) रवीन्द्रनाथ टैगोर

उत्तर–(ग) रामकृष्ण परमहंस।

प्रश्न 3. "सुभाष ! तुम मेरी आशा हो। मेरे भारत का भविष्य हो।" यह किसने कहा था ?

(क) माता प्रभावती देवी (ख) शरत्चन्द्र बोस (ग) महात्मा गाँधी

(घ) देशबन्धु चितरंजनदास (ङ) श्रीमती एमिली बोस

उत्तर–(घ) देशबन्धु चितरंजनदास।

प्रश्न 4. "आनन्द सागर में आज ज्वार आया है, सब जन पतवार थाम कर बैठे रहो।" यह पंक्ति किस कवि की है ?

(क) माखनलाल चतुर्वेदी (ख) मैथिलीशरण गुप्त (ग) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(घ) महर्षि अरविन्द (ङ) रामकृष्ण परमहंस

उत्तर–(ग) रवीन्द्रनाथ टैगोर।

प्रश्न 5. पेशावर से काबुल तक सुभाष को एक अच्छा मित्र और सहयोगी मिल गया, वह था—

(क) शिशिर कुमार (ख) अकबर शाह पठान (ग) भगतराम तलवार

(घ) उत्तमचन्द मल्होत्रा (ङ) मुहम्मद शाह

उत्तर–(ख) अकबर शाह पठान।

प्रश्न 6. "वतन की खातिर कोई भी कुरबानी बड़ी नहीं होती, भाई जान !" ये शब्द किसने कहे ?

(क) शिशिर कुमार (ख) अकबर शाह (ग) रासबिहारी बोस

(घ) भगतराम तलवार (ङ) मुहम्मद शाह

उत्तर–(ख) अकबर शाह।

प्रश्न 7. यूरोप में सुभाष ने एक पुस्तक लिखी थी, उसका नाम है—

(क) मेरी आत्मकथा (ख) मेनकेम्फ (ग) गीतांजलि

(घ) आजादी की कहानी (ङ) द इण्डियन स्ट्रगल

उत्तर–(ङ) द इण्डियन स्ट्रगल।

प्रश्न 8. ''आई.सी.एस.'' बनने के बाद सुभाष के सामने क्या उलझन थी ?

(क) व्यापार करें या नौकरी (ख) विवाह करें या नौकरी

(ग) देश सेवा करें या नौकरी (घ) समाज सेवा करें या नौकरी

(ङ) पत्रकारिता करें या नौकरी

उत्तर–(ग) देश सेवा करें या नौकरी।

प्रश्न 9. ''एक बार सुभाष नहीं रहे तो कोई बात नहीं, किन्तु यदि गाँधी नहीं रहेंगे तो आजादी पाकर भी भारत की जनता आजादी के सुख से वंचित रह जायेगी।'' यह किसने कहा ?

(क) मनीद्र राय (ख) सुभाष चन्द्र बोस (ग) शरत्चन्द्र बोस

(घ) रासबिहारी बोस (ङ) देशबन्धु चितरंजनदास

उत्तर–(ख) सुभाष चन्द्र बोस।

प्रश्न 10. ''अब उसका उद्देश्य मात्र युद्ध, संहार, हिंसा, पीड़ा और उत्पीड़न का खेल खेलना ही रह गया है।'' यह किस व्यक्ति के लिए कहा गया है ?

(क) मुसोलिनी (ख) हिटलर (ग) सुभाषचन्द्र बोस

(घ) रासबिहारी बोस (ङ) किसी के लिए नहीं

उत्तर–(ख) हिटलर।

प्रश्न 11. ''हे राष्ट्रपिता ! हम भारत के इस पवित्र मुक्ति-युद्ध में आपका आशिर्वाद एवं शुभकामनाएँ चाहते हैं.........'' यह आह्वान नेताजी सुभाषचन्द्र ने आजाद हिन्द रेडियो के किस केन्द्र से किया था ?

(क) सिंगापुर (ख) बर्लिन (ग) रंगून

(घ) टोकियो (ङ) बैंकाक

उत्तर–(ग) रंगून।

प्रश्न 12. ''एक राष्ट्र भारत, एक शत्रु इंग्लैण्ड और एक ही लक्ष्य स्वाधीनता।'' यह किसने कहा था ?

(क) नेताजी सुभाषचन्द्र बोस (ख) रासबिहारी बोस

(ग) महात्मा गाँधी (घ) जवाहरलाल नेहरू

(ङ) लाला लाजपतराय

उत्तर–(ख) रासबिहारी बोस।

प्रश्न 13. "मैं किसी गुलाम देश का नागरिक नहीं हूँ, बल्कि स्वतन्त्र होने वाले देश का स्वतन्त्र नागरिक हूँ।" सुभाष ने यह किससे कहा ?

(क) हिटलर से (ख) मुसोलिनी से

(ग) अंग्रेज सरकार से (घ) रिबेन ट्राप से

(ङ) किसी से नहीं

उत्तर–(घ) रिबेल ट्राप से।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. "करो या मरो" का नारा किसने दिया ? कब दिया ?

उत्तर–"करो या मरो" का नारा सुभाषचन्द्र बोस ने दिया था।

प्रश्न 2. "स्वतन्त्र भारत केन्द्र" की स्थापना कहाँ हुई ? कब हुई ?

उत्तर–स्वतन्त्र भारत केन्द्र की स्थापना बर्लिन में सन् 1941 में हुई थी।

प्रश्न 3. नेताजी का जन्मदिन रंगून में किस स्थान पर मनाया गया ?

उत्तर–नेताजी का जन्मदिन रंगून में 'आजाद हिन्द मुख्यालय' पर बड़ी धूमधाम व उल्लास से मनाया गया।

प्रश्न 4. "आई.सी.एस." पद स्वीकार करने वाले सबसे पहले व्यक्ति कौन थे ?

उत्तर–आई.सी.एस. पद स्वीकार करने वाले सबसे पहले व्यक्ति सत्येन्द्रनाथ टैगोर थे।

प्रश्न 5. सुभाष गाँधीजी से कब और कहाँ मिले ?

उत्तर–सुभाष गाँधीजी से विलायत से लौटने पर बम्बई में 'मणि भवन' में मिले थे।

प्रश्न 6. "हिंसा से भी बड़ी ताकत अहिंसा में होती है।" यह किसने बताया ?

उत्तर–यह कथन गाँधीजी का है।

प्रश्न 7. गाँधीजी से मिलने पर सुभाष ने सर्वप्रथम क्या कहा ?

उत्तर–गाँधीजी से मिलने पर सुभाष ने सर्वप्रथम कहा था—"मैं क्षमा प्रार्थी हूँ, इंग्लैण्ड से सीधा आपके पास आया हूँ।"

प्रश्न 8. एक क्रान्तिकारी महिला ने स्वयं के शरीर पर पुलिस के डण्डे झेलकर सुभाष को बचाया था। उस महिला का नाम क्या था ?

उत्तर–कमला देवी ने स्वयं के शरीर पर पुलिस के डण्डे झेलकर सुभाष को बचाया था।

प्रश्न 9. सुभाष के राजनैतिक गुरु कौन थे ?

उत्तर–देशबन्धु चितरंजनदास सुभाष के राजनैतिक गुरु थे।

प्रश्न 10. आजाद हिन्द सेना इम्फाल तक क्यों नहीं पहुँच पायी ?

उत्तर–अत्यधिक वर्षा व बाढ़ के कारण आजाद हिन्द सेना इम्फाल तक नहीं पहुँच पायी।

प्रश्न 11. गुरुदेव रवीन्द्र ने कांग्रेस में दो आधुनिकतावादी बताये थे। वे कौन थे ?

उत्तर–रवीन्द्रनाथ ने कांग्रेस में दो आधुनिकतावादी बताये थे—

(1) जवाहरलाल नेहरू

(2) सुभाषचन्द्र बोस।

प्रश्न 12. बर्लिन पहुँचने पर एक होटल में सुभाष को किस नाम से ठहराया गया था ?

उत्तर–सुभाष को होटल में 'मिस्टर आलेन्दो मसजोत्ता' के नाम से ठहराया गया था।

प्रश्न 13. "जन-गण-मन अधिनायक....." राष्ट्रगान के रचयिता कवि का नाम बताओ।

उत्तर–राष्ट्रगान के रचयिता रवीन्द्रनाथ टैगोर थे।

प्रश्न 14. "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" यह किस महापुरुष ने कहा था ?

उत्तर–यह कथन सुभाषचन्द्र बोस का है।

प्रश्न 15. "रानी झाँसी रेजीमेंट" की कप्तान किसे बनाया गया ?

उत्तर–डॉक्टर लक्ष्मी को 'रानी झाँसी रेजीमेंट' की कप्तान बनाया गया था।

प्रश्न 16. रेजीमेंट की लड़कियों ने जो नाटक खेला, उसका नाम क्या था ?

उत्तर–रेजीमेंट की लड़कियों ने झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई का नाटक खेला था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. शिशिर कुमार अपने चाचा सुभाषचन्द्र बोस के साथ क्रान्ति के संग्राम में क्यों जाना चाहता था ?

उत्तर–शिशिर कुमार सुभाषचन्द्र बोस का भतीजा था। उसने देखा कि उसके चाचा आई.सी.एस. की गरिमा के पद को त्याग कर देश को स्वतन्त्र कराने के लिये सशस्त्र क्रान्ति कर रहे हैं। उसके मन में भी देश सेवा के भाव जागृत हुए और वह भी उनके साथ क्रान्ति के संग्राम में जाना चाहता था।

प्रश्न 2. सुभाष ने अपनी आराध्य माँ से क्या माँगा ?

उत्तर–सुभाष ने अपनी आराध्य माँ काली से निम्नलिखित प्रार्थना की—"माँ तू सब की माँ है। मुझे धन, दौलत, ऐश्वर्य, आराम कुछ नहीं चाहिए। माँ ! इस भारत भूमि को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कर दो। बस, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। सबको मुक्ति का वरदान दो।

मैं तेरी साक्षी का वरदान लेकर विदेशी शक्तियों के सहयोग से मुक्ति की राह खोजने जा रहा हूँ। माँ ! मेरा मार्ग प्रशस्त करना....।

प्रश्न 3. सुभाष को पठानी रीति-रिवाज आदि क्यों सीखने पड़े ?

उत्तर–सुभाष पठानी वेश में घर की जेल से निकले थे। उन्हें पेशावर व काबुल होकर जाना था। इसलिए उन्हें सामान्य पठानी रीति-रिवाज आदि सीखने पड़े।

प्रश्न 4. देशबन्धु सुभाष को देखते ही कैसे पहचान गये कि वह सुभाष है ?

उत्तर–देशबन्धु सुभाष के तेजस्वी मुख को देख कर तुरन्त पहचान गये कि वह सुभाष है।

प्रश्न 5. सुभाष गाँधीजी की बात से क्यों सहमत नहीं थे ?

उत्तर–गाँधीजी शान्ति, सत्याग्रह व अहिंसा से देश को स्वतन्त्र कराना चाहते थे। सुभाष जानते थे कि अन्यायी व अत्याचारी ब्रिटिश सरकार शान्ति से देश छोड़ने वाली नहीं है। वे शस्त्रों की सहायता में विश्वास करते थे। इस बात को गाँधीजी नहीं चाहते थे। हिंसा व अहिंसा के प्रयोग पर दोनों में मतभेद थे।

प्रश्न 6. जापान के प्रधानमंत्री जनरल तोजो ने सुभाष का स्वागत किन शब्दों में किया ?

उत्तर–जापान के प्रधानमंत्री ने सुभाष का स्वागत करते हुए कहा था—"भारत के महानायक का स्वागत ! अभिनन्दन।"

प्रश्न 7. जापान की पराजय के समाचार नेताजी को कब मिले ?

उत्तर–जापान की पराजय के समाचार नेताजी को उस समय मिले जब वे सिंगापुर में आजाद हिन्द सेना के शहीदों की याद में स्मारक बनवा रहे थे। एस.ए.अय्यर ने उन्हें बतलाया कि अमेरिका ने हिरोशिमा व नागासाकी पर बम गिराये। शहर नष्ट हो गये तथा जापान ने विवश होकर आत्मसमर्पण कर दिया।

प्रश्न 8. श्रीमती एमिली बोस नेताजी से बर्लिन के किस होटल में मिली थी ?

उत्तर–एमिली बोस नेताजी से बर्लिन के 'एक्सेल्सियर' होटल में मिली थी।

प्रश्न 9. 'स्वतन्त्र भारत केन्द्र' के दो प्रमुख व्यक्तियों के नाम बताइये।

उत्तर–(i) आबिद हसन

(ii) नाम्बियार।

प्रश्न 10. आजाद हिन्द रेडियो के प्रसारण केन्द्र कहाँ-कहाँ थे ?

उत्तर–आजाद हिन्द रेडियो के प्रसारण केन्द्र पाँच स्थानों पर थे—(1) सिंगापुर (2) रंगून (3) बैंकाक (4) सैगोन (5) टोकियो।

प्रश्न 11. मांटिक्यू सुभाष को ब्रिटिश सरकार की सेवा में क्यों बाँध कर रखना चाहता था ?

उत्तर–मांटेक्यू जानता था कि सुभाष क्रान्तिकारी है। यदि वह सरकारी सेवा में लग जायेगा तो स्वतन्त्रता के लिये क्रान्ति नहीं करेगा। इसलिए वह सुभाष को सरकारी सेवा में लगाना चाहता था।

प्रश्न 12. पुलिस अधिकारी ने मजिस्ट्रेट से सुभाष पर डण्डे बरसाने से क्यों मना किया ?

उत्तर–पुलिस अधिकारी जानता था कि सुभाष काफी कमजोर हो गए। डण्डे बरसाने से उसकी मृत्यु होने की आशंका थी। इसलिए उसने मजिस्ट्रेट को उस पर डण्डे बरसाने से मना किया।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. "जीवन में पीड़ायें भोगे बिना सुख और आनन्द नहीं मिलता।" इस वाक्य के भावार्थ को समझाइए।

उत्तर–जीवन फूलों की सेज नहीं, काँटों का ताज है। मनुष्य जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये कठिन परिश्रम करता है। अनेक प्रकार की यातनायें भोगता है। परिवार के सुखों का त्याग करता है। तब उसे कहीं जाकर सफलता मिलती है। यह सत्य है कि जीवन का आनन्द व सुख कष्ट भोगे बिना प्राप्त नहीं हो सकता। परिश्रम करने वाले व्यक्ति का भाग्य भी साथ देता है। मनुष्य को सदैव श्रम के प्रति निष्ठा रखनी चाहिए।

प्रश्न 2. आपका जिन्दा रहना और जेल में बन्द रहना, दोनों ही बहुत जरूरी हैं। डॉक्टर पंचानन के इस कथन से अंग्रेजों की किस कूटनीति का संकेत मिलता है ?

उत्तर–डॉक्टर पंचानन जब सुभाष से मिले तो वे अस्वस्थ थे। उस समय डॉक्टर ने उनसे कहा कि सरकार चाहती है कि आप जिन्दा भी रहें तथा जेल में ही रहें। सरकार यह जानती थी कि यदि सुभाष मर जाते हैं तो पूरे देश में भयंकर विद्रोह उठेगा और यदि सुभाष जेल में ही रहते हैं तो क्रान्तिकारियों को प्रेरणा देने वाला इतना शक्तिशाली व्यक्ति नहीं मिलेगा। यह अंग्रेजों की कूटनीति थी।

प्रश्न 3. विभावती ने सुभाष को जब पलायनवादी बताया तो उन्होंने क्या कहा ?

उत्तर–विभावती देवी ने जब सुभाष को पलायनवादी कहा तो सुभाष ने कहा कि वह पलायनवादी नहीं है। देश की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए मोह-ममता का त्याग करना जरूरी है। संन्यास और भक्ति भाव रखना पलायनवाद नहीं कहलाता है। स्वाधीनता का आन्दोलन सोया पड़ा है। सुभाष ने उसे विश्वास दिलवाया कि वह पलायनवादी नहीं है बल्कि देश के लिये ही कुछ कर रहा है।

प्रश्न 4. गाँधीजी के प्रथम दर्शन का वर्णन सुभाष ने किन शब्दों में किया ?

उत्तर–इंग्लैण्ड से लौटने पर सुभाष सबसे पहले गाँधीजी से मिले, गाँधीजी को देख कर उन्होंने कहा कि उनका शरीर दुबला-पतला अधनंगा था। कमर से नीचे घुटनों तक खादी की आधी धोती थी और ऊपर का शरीर उघड़ा था। उनका पूरा कमरा सादगी, सात्विकता और स्वदेशी का संदेश दे रहा था।

प्रश्न 5. विवेकानन्द के चित्र से सुभाष ने क्या प्रेरणा ली ?

उत्तर–सुभाष ने विवेकानन्द के तेजस्वी चित्र को देखा । उनके चित्र से उसने प्रेरणा ली कि दुःखों के सागर से ही पुरुषार्थ जन्म लेता है । कर्मशील शक्ति-पुंज ही जीवन में संघर्ष करते हुए सफल होते हैं ।

प्रश्न 6. "आई.सी.एस." छोड़ने का निश्चय करने के बाद सुभाष ने अपने बड़े भाई को इंग्लैण्ड से क्या लिखा ?

उत्तर–सुभाष ने इंग्लैण्ड से आई.सी.एस. की परीक्षा पास की परन्तु उन्होंने नौकरी करने का विचार त्याग दिया । उन्होंने अपने भाई को पत्र लिखा कि उन्होंने आई.सी.एस. का विचार छोड़ दिया है । वह देश सेवा और नौकरी एक साथ नहीं कर सकता ।

उन्होंने पत्र में लिखा, "हे भारत माता ! आराध्य माँ ! विश्वास कर, सुभाष आ रहा है..... आ रहा है...... उसे संसार का कोई प्रलोभन नहीं रोक सकता है ।"

"हे मेरे हिन्द देश ! मेरा दृढ़ विश्वास है, दासता की जंजीरों से तू शीघ्र मुक्त होगा । घर-घर में चिर-आनन्द की अविरल धारा प्रवाहित होगी । वेद-ऋताएँ गूँजेंगी । सृष्टि महकेगी । दिव्यताएँ चहकेंगी । स्वाधीन आकाश की छत्र-छाया में नये भारत का निर्माण होगा ।"

प्रश्न 7. विदेशी पत्रकार के सामने गाँधीजी ने सुभाष के बारे में क्या-क्या कहा ?

उत्तर–फ्रांस के एक पत्रकार ने गाँधीजी से कहा कि "सुभाष तो हिटलर की अधीनता स्वीकार कर चुके हैं ।" तब गाँधीजी ने पत्रकार से कहा—यह आरोप गलत है । सुभाष ऐसा करना तो दूर, सोच भी नहीं सकता । यद्यपि मैं सुभाष की हिंसा पद्धति के पक्ष में नहीं हूँ, फिर भी वह मुझे पसन्द है ।" सुभाष शुद्ध मन का है.....वह कोई भी ऐसा काम नहीं कर सकता जिससे देश का स्वाभिमान आहत तो । वह हिटलर से सहायता तो ले सकता है, किन्तु उसकी अधीनता स्वीकार नहीं कर सकता । उसके हाथ में देश सुरक्षित है ।

प्रश्न 8. "अस्थायी आजाद हिन्द सरकार" के घोषणा-पत्र की मुख्य-मुख्य बातें क्या थीं ?

उत्तर–सुभाष चन्द्र बोस ने अस्थायी आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की । उसके घोषणा-पत्र में 1857 के गदर की क्रान्ति के बारे में बताया । 1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई । 1920 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन हुआ । 1942 में क्रान्ति की नई चेतना जागी । सुभाष ने बताया कि अस्थायी सरकार का सबसे मुख्य कार्य अंग्रेजों से देश को मुक्त कराकर स्थायी सरकार देना है । 'आजाद हिन्द सरकार' अपने समस्त नागरिकों को धार्मिक स्वाधीनता और समान अवसर का अधिकार देती है । यह सरकार सम्पूर्ण भारतवर्ष और उसके समस्त भू-भाग के निवासियों को सुख-समृद्धि प्रदान करने तथा

विदेशी सरकार द्वारा खोदी गई भेद-भाव की खाई को निष्पक्ष भाव से पाटने का संकल्प लेती है।

प्रश्न 9. नेताजी ने अभी-अभी हमें पाँच मूल्यवान वरदान दिये हैं। ये पाँच वरदान कौन-कौन से थे ? व्याख्या सहित लिखें।

उत्तर–नेताजी ने हमें पाँच बहुमूल्य वरदान दिये हैं—

1. जय हिन्द।

2. तिरंगा झण्डा जिसके बीज में छलांग लगता शेर।

3. "जन-गण-मन" वाला गौरव गीत।

4. "राष्ट्रपिता" का पवित्र सम्बोधन।

5. राष्ट्रभाषा हिन्दी।

प्रश्न 10. "कलकत्ता भवन" पर सुभाषचन्द्र बोस ने अपने भाषण में क्या कहा ?

उत्तर–कलकत्ता भवन पर सुभाषचन्द्र बोस ने अपने भाषण में कहा, "वन्दे मातरम्"। वन्दे मातरम् में बड़ी शक्ति है। इसमें आजादी का संदेश है। सोते-जागते हमें वन्दे मातरम् ही कहना है। सुभाष ने कहा कि बर्मा की मांडले जेल में लाला लाजपतराय तथा लोकमान्य तिलक ने कारावास भोगा। वे भी लम्बे समय तक वहाँ रहे। देशबन्धु चितरंजनदास भी वहाँ छः महीने तक रहे। जेल में ही तिलक ने गीता भाष्य लिखा। कारावास तो छोटी परतन्त्रता है। हमें देश को परतन्त्रता से मुक्त कराना है। उन्होंने देशवासियों को कहा—"आप उठिए, जागिए। अब हमें समाज के प्रत्येक वर्ग की स्वाधीनता का मंत्र फूँकना है। धनी-गरीब, युवा-वृद्ध, हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख-ईसाई सभी को स्वाधीन करना है। हमारा स्वाधीन भारत का सपना है। मैं चाहता हूँ देश में एक स्वाधीन गणतन्त्र की प्रतिष्ठा हो। उसके भाग्य का नियन्त्रण उसके अपने ही हाथ में हो। भारत के कोने-कोने में मुक्ति का नारा, सम्पूर्ण स्वाधीनता का नारा गूँजे।"

बन्धुओं, बहिनों ! हम लोग ही नए भारत के निर्माता हैं, अतः आगे बढ़ें। सब मिलकर इस मुक्ति-यज्ञ में अपनी आहुति दें। अब पल मात्र भी विलम्ब नहीं करें। सर्वस्व बलिदान के लिए माँ के चरणों में समवेत् समर्पित होने को तैयार हो जायें।

इस प्रकार कलकत्ता भवन में सुभाषचन्द्र बोस ने ओजस्वी भाषण दिया। जनता ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया तथा सुभाषन्द्र बोस जिन्दाबाद के नारे लगाये।

प्रश्न 11. सुभाष ने स्वाधीन, समृद्धि और सुखी भारत का सपना देखते हुए क्या कहा था ?

उत्तर–कृपया इस प्रश्न का उत्तर प्रश्न संख्या 10 के उत्तर में देखें।

पाठ्यपुस्तक के अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. "मेरी मातृभूमि ही मेरी आराध्या देवी है।" यह आप्त वाक्य किस महापुरुष का है ?

(क) सुभाषचन्द्र बोस (ख) लाला लाजपतराय

(ग) स्वामी विवेकानन्द (घ) रामकृष्ण परमहंस

(ङ) महात्मा गाँधी

उत्तर–(क) सुभाषचन्द्र बोस।

प्रश्न 2. "सुभाष तेजस्वी है, मेधावी है, स्वाधीनता की उत्कंट आकांक्षा उसके मन में है।" ये विचार किसके हैं ?

(क) देशबन्धु के (ख) विभावती के (ग) गाँधीजी के

(घ) वासंती देवी के (ङ) शरत्चन्द्र के

उत्तर–(ग) गाँधीजी के।

प्रश्न 3. जब गाँधीजी से पहली बार सुभाष मिले तब उन्होंने विदेशी वस्त्र पहन रखे थे। उससे उन्होंने क्या अनुभव किया ?

(क) ग्लानि (ख) संकोच (ग) भय

(घ) झिझक (ङ) लज्जा

उत्तर–(ङ) लज्जा।

प्रश्न 4. देश के विभिन्न कॉलेजों से निकाले गये राष्ट्रवादी छात्रों के लिए कौन-सा स्थान था ?

(क) शान्ति निकेतन (ख) आगरा कॉलेज (ग) नेशनल कॉलेज

(घ) बनारस विश्वविद्यालय

(ङ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर–(ग) नेशनल कॉलेज।

प्रश्न 5. "इस मंत्र में हमारी एकता ही शक्ति, आजादी का संदेश और हमारी जननी माँ-मातृभूमि की वंदना का उल्लास छिपा है।" यह मंत्र कौनसा था ?

(क) जय हिन्द (ख) जय जवान, जय किसान

(ग) भारत माता की जय (घ) इंकलाब-जिन्दाबाद

(ङ) वन्दे मातरम्।

उत्तर–(ङ) वन्दे मातरम्।

प्रश्न 6. "आनन्द सागर में आज ज्वार आया है। सब जन पतवार थामकर बैठे रहो।" ये पंक्तियाँ किस कवि की हैं ?

(क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) माखनलाल चतुर्वेदी

(ग) रामधारीसिंह दिनकर (घ) सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"

(ङ) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

उत्तर–(ङ) रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

प्रश्न 7. "मिस्टर बोस ! आपके लिए एक खुशखबरी और है।" जेलर के इन शब्दों में क्या भाव है ?

(क) क्रोध (ख) व्यंग्य (ग) ग्लानि

(घ) प्रेम (ङ) श्रद्धा

उत्तर–(ख) व्यंग्य।

प्रश्न 8. "क्यों नहीं आप गाँधीजी का टोटका अजमाएँ।" यहाँ "टोटका" से क्या आशय है ?

(क) असहयोग आन्दोलन (ख) प्रर्थाना (ग) अनशन

(घ) त्याग (ङ) चारों में से कोई नहीं

उत्तर–(ग) अनशन।

प्रश्न 9. कलकत्ता से सुभाष के अचानक चले जाने पर कांग्रेस की क्या प्रतिक्रिया रही ?

(क) प्रसन्नता व्यक्त की (ख) सुभाष को भूल गये

(ग) स्वतन्त्रता आन्दोलन रोक दिया (घ) नेताओं ने चिन्ता व्यक्त की

(ङ) ढूँढ़ना शुरू कर दिया

उत्तर–(घ) नेताओं ने चिन्ता व्यक्त की।

प्रश्न 10. काबुल में सुभाष को एक अच्छा मित्र मिल गया, वह था—

(क) शिशिर कुमार बोस (ख) भगतराम तलवार

(ग) अकबर शाह (घ) उत्तमचन्द मल्होत्रा

(ङ) शरत्चन्द्र बोस

उत्तर–(घ) उत्तमचन्द मल्होत्रा।

प्रश्न 11. "उसकी आँखों में करुणा के फूल नहीं खिलते, क्रूरता के कंटीले केक्टस उगते हैं।" यह किस व्यक्ति के लिए कहा गया है ?

(क) जवाहरलाल नेहरू (ख) मुसोलिनी

(ग) हिटलर (घ) भगतसिंह

(ङ) सुभषचन्द्र बोस

उत्तर–(ग) हिटलर।

प्रश्न 12. यूरोप में सुभाष ने एक ग्रन्थ की रचना की थी, उसका नाम है—

(क) गीतांजलि (ख) मेरी आत्मकथा

(ग) दि इण्डियन स्ट्रगल (घ) मेनकेम्फ

(ङ) आजादी की कहानी

उत्तर–(ग) दि इण्डियन स्ट्रगल।

प्रश्न 13. "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" यह आह्वान किस महापुरुष ने किया था ?

(क) महात्मा गाँधी (ख) भगतसिंह

(ग) रासबिहारी बोस (घ) नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

(ङ) लाला लाजपतराय

उत्तर–(घ) नेताजी सुभाष चन्द्र बोस।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 14. "आत्मोत्सर्ग से ही आत्मोद्धार संभव है ?" यह वाक्य किसने कहा है ?

उत्तर–यह वाक्य रामकृष्ण परमहंस ने कहा था।

प्रश्न 15. देशबन्धु सुभाष को देखते ही कैसे पहचान गए कि वह सुभाष है ?

उत्तर–देशबन्धु सुभाष के तेजस्वी मुखमण्डल को देखकर तुरन्त पहचान गये कि वह सुभाष है।

प्रश्न 16. सुभाष ने गाँधीजी को सबसे पहले क्या सूचना दी ?

उत्तर–सुभाष ने गाँधीजी को सबसे पहले सूचना दी कि उन्होंने आई.सी.एस. की नौकरी छोड़ दी है। देश के लिये अब वे कुछ करना चाहते हैं।

प्रश्न 17. हिंसा से भी बड़ी ताकत गाँधीजी ने क्या बताई ?

उत्तर–गाँधीजी ने बताया कि हिंसा से अहिंसा में सबसे बड़ी ताकत है।

प्रश्न 18. सुभाष ने सच्चे पथ-प्रदर्शक के रूप में किसे पाया ?

उत्तर–सुभाष ने सच्चे पथ-प्रदर्शक के रूप में देशबन्धु चितरंजनदास को प्राप्त किया।

प्रश्न 19. जेलर ने खुशखबरी कहकर सुभाष को क्या समाचार सुनाया ?

उत्तर–जेलर ने सुभाष से कहा कि वह उसे जेल से नहीं छोड़ेगी। इसके साथ ही उस पर दफा 36 भी जोड़ दिया है, ताकि वह सदा ही जेल में रह सके।

प्रश्न 20. रूस, इटली, आयरलैंड आदि किसकी मदद से मुक्त हुए थे ?

उत्तर–रूस, इटली, आयरलैंड आदि देशों को स्वतन्त्र होने में बाहरी देशों से ही मुक्ति मिली थी। बाहरी देशों ने उनकी सहायता की थी।

प्रश्न 21. सुभाषचन्द्र बीमा कम्पनी के ट्रेवलिंग एजेन्ट बनकर निकले तब उनका नाम क्या था ?

उत्तर–बीमा एजेन्ट के रूप में सुभाष का नाम मोहम्मद जियाउद्दीन था।

प्रश्न 22. सुभाष चन्द्र बोस को पठानी रीति-रिवाज आदि क्यों सीखने पड़े ?

उत्तर–सुभाष चन्द्र को काबुल में जाना था। मार्ग में पठानी वेश में उन्हें कोई पहचान न ले, इसलिये उनके लिये पठानी रीति-रिवाज सीखना आवश्यक था।

प्रश्न 23. "सुभाष ! तुम मानवता के मसीहा हो, आजादी के प्रहरी और मातृ-भूमि के अनमोल लाल हो।" यह वाक्य किसने कहा ?

उत्तर–यह वाक्य एमिली ने सुभाष के लिये कहा था।

प्रश्न 24. "मैं किसी गुलाम देश का नागरिक नहीं हूँ, बल्कि स्वतन्त्र होने वाले देश का स्वतंत्र प्रतिनिधि हूँ।" सुभाष ने यह किससे कहा ?

उत्तर–यह वाक्य सुभाष ने मि. रिबेन ट्राप से कहा था।

प्रश्न 25. सुभाष चन्द्र बोस को बर्लिन पहुँचने पर किस होटल में ठहराया गया था ?

उत्तर–सुभाष को बर्लिन में एक्सेल्सियर होटल में ठहराया था।

प्रश्न 26. "स्वतन्त्र भारत केन्द्र" की स्थापना कब और कहाँ हुयी ?

उत्तर–"स्वतन्त्र भारत केन्द्र" की स्थापना बर्लिन में सन् 1941 में हुयी थी।

प्रश्न 27. "आजाद हिन्द रेडियो" के प्रसारण केन्द्रों के नाम बताओ।

उत्तर–आजाद हिन्द रेडियो के पाँच केन्द्र थे—सिंगापुर, बैंकाक, रंगून, सैगोन और टोकियो।

प्रश्न 28. नेताजी का जन्म-दिन रंगून में कब मनाया गया ?

उत्तर–नेताजी का जन्मदिन रंगून में 21 जनवरी, 1945 को मनाया गया।

प्रश्न 29. रानी झाँसी रेजीमेंट ने जो नाटक अभिनीत किया, उसका क्या नाम था ?

उत्तर–नाटक का नाम था—'झाँसी की रानी महारानी लक्ष्मी बाई'।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 30. "आई.सी.एस." बनने के बाद सुभाष के मन में क्या-क्या इच्छाएँ जागीं ?

उत्तर–"आई.सी.एस." परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सुभाष के मन में अनेक विचार उठे। वे रामकृष्ण मिशन में सम्मिलित होना चाहते थे। वे एक सम्पादक या पत्रकार बनना चाहते थे। कभी वे बोलपुर ही जाना चाहते थे। वे अपने आपको देश सेवा में लगाना चाहते थे।

प्रश्न 31. मांटेक्यू सुभाष को ब्रिटिश सरकार की सेवा में क्यों बाँधना चाहता था ?

उत्तर–मांटेक्यू सुभाष को ब्रिटिश सरकार की सेवा से बाँधना चाहता था ताकि वे नौकरी के कारण सरकार का विरोध नहीं कर सकें। वह जानता था कि सुभाष देश का

क्रान्तिकारी व्यक्ति था। स्वतन्त्र रहकर वह भारतीयों को अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध बहकायेगा।

प्रश्न 32. वसन्ती देवी ने ब्रिटिश सत्ता की पहली करारी हार किसे बताया ?

उत्तर–वसन्ती देवी ने कहा कि ब्रिटिश सत्ता की पहली करारी हार है कि पटना निगम में राजेन्द्र प्रसाद, इलाहाबाद में जवाहरलाल, बम्बाई में विट्ठल भाई पटेल और अहमदाबाद में बल्लभ भाई पटेल महापौर चुन गये हैं।

प्रश्न 33. अधिकारी ने मजिस्ट्रेट से सुभाष पर डण्डे बरसाने से क्यों मना किया ?

उत्तर–अधिकारी ने मजिस्ट्रेट से सुभाष पर डण्डे बरसाने से मना किया क्योंकि सुभाष काफी कमजोर था। अगर उसको मारा जायेगा तो कोई नई आफत खड़ी हो सकती है। वह आजादी का दीवाना है, मर सकता है परन्तु झुक नहीं सकता।

प्रश्न 34. जेल में सुभाषचन्द्र बोस को यूरोप की पिछली यात्रा क्यों याद आई ?

उत्तर–कलकत्ता जेल में सुभाष चन्द्र बोस को यूरोप की पिछली यात्रा याद आयी। उन्होंने याद किया कि विदेशों में प्रवासी भारतीय हैं। सभी विदेशी प्रवासी भारतीय सुभाष को सहयोग देने के लिये तैयार थे। उनकी पुस्तक 'दि इण्डियन स्ट्रगल' ने पश्चिमी देशों में तहलका मचा दिया था। 'सन्डे टाइम्स' तथा 'डेली हेरोल्ड' आदि पत्रों ने भी सुभाष के विचारों की सराहना की थी।

प्रश्न 35. विवेकानन्द के चित्र से सुभाष ने क्या प्रेरणा ली ?

उत्तर–सुभाष ने विवेकानन्द के तेजस्वी चित्र को देखा। उनके चित्र से उसने प्रेरणा ली कि दु:खों के सागर से ही पुरुषार्थ जन्म लेता है। कर्मशील शक्ति पुंज ही जीवन में संघर्ष करते हुए सफल होते हैं।

प्रश्न 36. "आपका जिन्दा रहना और जेल में बंद रहना दोनों ही बहुत जरूरी हैं।" डॉ. पंचानन ने इसके पीछे अंग्रेजी सरकार की कौन सी कूटनीति बतायी थी ?

उत्तर–डॉ. पंचानन ने सुभाष से कहा कि उनका जिन्दा रहना देशवासियों को प्रेरणा देता है तथा सरकार भी चाहती है कि आप जिन्दा रहें, भले ही जेल में रहें। सरकार मानती है कि यदि आप जेल में मर जाते हैं तो देश में बड़ा भारी विप्लव हो जावेगा। आपकी लोकप्रियता से सरकार पूर्णतया परिचित है। इस प्रकार डॉ. पंचानन ने सुभाष को सरकार की कूटनीति से अवगत कराया।

प्रश्न 37. सुभाष शिशिर को अपने साथ विदेश क्यों नहीं ले गए ?

उत्तर–सुभाष शिशिर का विश्वासपात्र साथी था। वे चाहते थे कि उनकी अनुपस्थिति में शिशिर भारत की गतिविधियों में सक्रियता से भाग ले तथा उनकी जानकारी उन्हें विदेश में देता रहे। इसलिये वे उसे अपने साथ विदेश में नहीं ले गये।

प्रश्न 38. "जीवन में पीड़ाएँ भोगे बिना सुख और आनन्द नहीं मिलता।" यह किसने कहा, क्यों कहा ?

उत्तर–उक्त वाक्य बर्लिन के एक्सेल्सियर होटल के कमरे में सुभाष चन्द्र बोस ने एमिली से कहा था । सुभाष ने एमिली को बतलाया कि भारत छोड़ने के बाद उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । उनकी पीड़ाओं की गाथा सुनकर एमिली भी आश्चर्य करने लगी । तब सुभाष ने कहा था "जीवन में पीड़ाएँ भोगे बिना सुख और आनन्द नहीं मिलता ।"

प्रश्न 39. "नेताजी ने अभी-अभी हमें पाँच मूल्यवान वरदान दिये हैं ।" ये पाँच वरदान कौन-कौन से थे ?

उत्तर–नेताजी ने हमें पाँच बहुमूल्य वरदान दिये हैं—

(1) जय हिन्द

(2) तिरंगा झण्डा—जिसके बीच में छलांग लगाता शेर ।

(3) 'जन-गण-मन' वाला गौरव गीत ।

(4) 'राष्ट्रपिता' का पवित्र सम्बोधन ।

(5) राष्ट्रभाषा हिन्दी ।

प्रश्न 40. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने स्वाधीनता की शपथ किन शब्दों में ली ?

उत्तर–"मैं सुभाष चन्द्र बोस, ईश्वर को साक्षी कर यह पावन शपथ लेता हूँ कि भारत को स्वाधीन कराने के लिये, अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों को स्वाधीन करने के लिये, मैं अपने जीवन की अन्तिम साँस तक स्वतन्त्रता की पावन लड़ाई जारी रखूँगा । स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् मैं सदैव भारत की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये अपने रक्त की अन्तिम बूँद बहाने को तैयार रहूँगा ।" इन शब्दों में सुभाष ने प्रतिज्ञा ली ।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न 41. सात समंदर पार से सुभाष ने अपने लम्बे पत्र में क्या-क्या लिखकर भेजा ?

उत्तर–सुभाषचन्द्र बोस लंदन में विद्याध्ययन करने गये थे । उन्होंने वहाँ से अपने सम्बन्धियों को तथा मित्रों को कई पत्र लिखे । एक बार उन्होंने अपने बड़े भाई को एक लम्बा पत्र लिखा । उसमें उन्होंने इस प्रकार अपने विचार प्रकट किये—

सुभाष अपने बड़े के लिये लिखते हैं—

"दादा मुझे आप पर गर्व है । अपने पिता तथा माता के आशीर्वाद से वे स्वाधीनता संग्राम में भाग ले सकते हैं । उन्होंने लिखा कि—देश की स्वतन्त्रता के लिये सैफुद्दीन किचलू, बल्लभ भाई पटेल, पं. मोतीलाल नेहरू, देशबन्धु चितरंजनदास, आसफ अली, राज गोपालाचार्य, एम. आर. जयकर सभी ने अच्छी आमदनी वाली अपनी वकालत छोड़ दी है । अत: वे भी देश सेवा के लिये अपनी आई.सी.एस. की नौकरी को त्याग कर रहे हैं ।"

सुभाष अपने पत्र के अन्त में सदैव 'भारत माता की जय' लिखते हैं ।

प्रश्न 42. सुभाष जब गाँधीजी से मिलकर देशबन्धु से मिले तो क्या वार्तालाप हुआ ?

उत्तर–सुभाष इंग्लैण्ड से आकर महात्मा गाँधी से मिले। महात्मा गाँधी ने ही देशबन्धु चितरंजनदास को सुभाष के बारे में बताया था। सुभाष ने देशबन्धु को बताया कि बम्बई के 'मणि भवन' में गाँधीजी से उनकी मुलाकात हुई। गाँधीजी वेशभूषा व हाव-भाव से बहुत ज्यादा प्रभावित हुए। वहाँ खादी पहने व्यक्ति अधिक थे। सुभाष विलायती वेशभूषा में थे, इसलिये वे बहुत लज्जित हुए। उन्होंने गाँधीजी को अपने जीवन के उद्देश्य के बारे में बताया तथा यह भी कहा कि उन्होंने आई. सी. एस. को स्वीकार नहीं किया है। सुभाष ने स्वाधीनता संग्राम में अस्त्र-शस्त्र की बात भी कही। इस पर गाँधीजी ने कहा कि हिंसा-हिंसा को जन्म देती है।

सुभाष ने देशबन्धु को बतलाया कि कोई भी देश बिना रक्त बहाये, बिना सर्वस्व गँवाये, मात्र करुणा, दया तथा सहयोग से स्वतन्त्र नहीं हुआ है। देशबन्धु ने उन्हें स्वतन्त्रता आन्दोलन को तेज करने के लिये प्रेरित किया।

प्रश्न 43. सुभाष से संन्यास की बात सुनकर विभावती ने जो प्रेरणास्पद वक्तव्य दिया, उसे विस्तार से लिखें।

उत्तर–जेल से छूटने के बाद सुभाष अपने ही घर में नजरबंद किये गए। उनकी भाभी विभावती को मालूम हुआ कि वह संन्यास ले रहे हैं, उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने सुभाष से कहा—"सारा संसार युद्ध की आग में जल रहा है। अंग्रेजों ने अपनी सत्ता बचाने के लिये पूरे देश को दाँव पर लगा दिया है। स्वाधीनता का आन्दोलन सोया पड़ा है। चारों ओर भय और लूट-पाट है। सुभाष ने उसे विश्वास दिलाया कि वह पलायनवादी नहीं है बल्कि देश के लिये ही कुछ कर रहा है।"

प्रश्न 44. सुभाष चन्द्र बोस ने देश छोड़ने के पहले माँ काली के समक्ष क्या उद्गार प्रकट किए ?

उत्तर–देश छोड़ने से पहले सुभाष ने माँ काली के समक्ष कहा था—"माँ ! मैं मेरे लिये कुछ नहीं चाहता। इस भारत भूमि को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करा दो। माँ ! कोटि-कोटि भारतवासी दासता की पीड़ा भोग रहे हैं, वे मुक्ति पाने के लिये प्राण-प्रण से आतुर हैं। वे सब तेरी संतान हैं। तू उन पर दया कर। सब को मुक्ति का वरदान दे।

माँ ! तू सबकी माँ है। हिन्दू, सिक्ख, बौद्ध, मुसलमान, ईसाई, जैन सबकी माँ, पूज्या भारत माँ.....सबकी प्राण प्रिय भारत जननी। तेरी शक्ति अपार है। अब मैं तेरी साक्षी का वरदान लेकर विदेशी शक्तियों के सहयोग से मुक्ति की राह खोजने जा रहा हूँ। माँ मेरा मार्ग प्रशस्त करना।"

प्रश्न 45. "बिना फल की इच्छा के कर्म करते रहने का फल मेरे सामने है। इस वाक्य के भाव को विस्तार से समझाओ।

उत्तर–गीता में बतलाया कि फल की इच्छा किये बिना कर्म करते रहना चाहिए। कर्म का फल अवश्य मिलता है। भले ही वह कर्म फल व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये न हो। सुभाष, गाँधी आदि नेताओं ने मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये कर्म किया। उनके कर्म के पीछे व्यक्तिगत फल की इच्छा नहीं थी, परन्तु देश की मुक्ति का फल सामने था।

प्रश्न 46. स्वतन्त्र भारत केन्द्र की स्थापना करते हुए सुभाषचन्द्र बोस ने क्या कहा ?

उत्तर–बर्लिन में स्वतन्त्र भारत केन्द्र की स्थापना हुई । उस समय सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था—

सुभाष ने भारत माता के चित्र के सामने कहा था—"हे आनन्ददायिनी जगन्माता ! तुमने पग-पग पर मुझे संबल देकर कृतार्थ किया । तुम्हारी कृपा से मेरे अभियान का हर पथ प्रशस्त होता गया । आज आकाश उन्मुक्त है । सूर्य प्रसन्नता बिखेर रहा है । तेरे लाड़ले सपूत अपनी मातृभूमि को पराधीनता की जंजीरों से मुक्त कराने का संकल्प ग्रहण करने के लिये यहाँ एकत्र हो रहे हैं ।

माँ ! तू अपने लाड़लों को शक्ति, भक्ति व मुक्ति प्रदान कर ताकि वे अपने संकल्प की साधना में सफल हों ।

प्रश्न 47. रासबिहारी बोस ने सुभाष की प्रशंसा करते हुए क्या वक्तव्य दिया था ?

उत्तर–रासबिहारी बोस ने अपने वक्तव्य में सुभाष के बारे में कहा कि—"नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को हमने अस्थायी आजाद हिन्द सरकार का राष्ट्राध्यक्ष और प्रधानमंत्री मनोनीत किया है ।"

प्रश्न 48. आजाद हिन्द रेडियो के रंगून केन्द्र से महात्मा गाँधी के नाम नेताजी ने क्या अपील प्रसारित की ?

उत्तर–सुभाष चन्द्र बोस ने रंगून रेडियो केन्द्र से महात्मा गाँधी के नाम निम्नलिखित अपील की—महात्माजी ! अब, जबकि आपका स्वास्थ्य कुछ ठीक हो गया है, मैं आपको भारत के बाहर रहने वाले देशभक्त भारतीयों की योजनाओं और गतिविधियों से अवगत कराना चाहता हूँ । न केवल इधर के भारतीय अपितु भारत के अन्दर भी लोगों का यह दृढ़ विश्वास है कि युद्ध के बिना ब्रिटिश सरकार, अनुभव, नैतिक दबाव अथवा अहिंसात्मक प्रतिरोध से कभी भी सत्ता नहीं छोड़ेगी । ब्रिटिश सरकार की नीति निर्दयतापूर्वक भारत का शोषण करने की है और संयुक्त राज्य अमेरिका इस कुचक्र में उसका साथ दे रहा है । इसलिये, यदि हम स्वतन्त्रता चाहते हैं तो हमें रुधिर की नदी में से निकलने को तैयार रहना होगा.......।

महात्माजी ! जापान ने अपने सहयोग से यह सिद्ध कर दिया है कि वह सच्चे हृदय से भारत को ब्रिटेन के चंगुल से मुक्त कराना चाहता है । यदि ऐसा नहीं होता तो वह जीते हुए प्रदेश अस्थायी आजाद हिन्द सरकार को क्यों सौंप देता ? आज हिन्द सरकार को जापान, जर्मनी और सात अन्य मित्र राष्ट्रों ने मान्यता दे दी है और इसके कारण विश्व में भारतीयों को एक नया दर्जा और नयी प्रतिष्ठा मिली है । अस्थायी हिन्द सरकार का मिशन केवल शुत्र को देश से बाहर निकालना है............।

महात्माजी ! मैंने जो कुछ किया है, अपने देश के हित के लिए किया है, विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने और स्वाधीनता के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए किया है ।

अब भारत की स्वाधीनता की आखिरी लड़ाई शुरू हो चुकी है । आजाद हिन्द फौज के सैनिक भारत की भूमि पर वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं............यह सशस्त्र युद्ध उस समय तक चलता रहेगा जब तक हम अंतिम अंग्रेज को भारत से न निकाल देंगे और हमारा तिरंगा झण्डा नई दिल्ली में वायसराय भवन पर न फहराने लगेगा ।

हे राष्ट्रपिता ! भारत के इस पवित्र मुक्ति युद्ध में हम आपका आशीर्वाद चाहते हैं ।

प्रश्न 49. नेताजी ने शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए क्या कहा ?

उत्तर–नेताजी ने शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था—"जिस देश की माताएँ और बहिनें अपने देश के लिये कुर्बानी देना जानते हैं, उन देशों के इतिहास स्वर्णाक्षरों में लिखे जाते हैं ।" शहीद स्मारक के पास सुभाष ने कहा—"भारत माता के सच्चे सपूत इन जवानों ने अपने रक्त से हस्ताक्षर कर आजाद हिन्द फौज से नाता जोड़ा था । राष्ट्रगीत गाते हुए, हँसते-हँसते इन्होंने युद्ध भूमि की ओर प्रणाम किया, अपनी वीरता से दुश्मनों के छक्के छुड़ाये और भारत भूमि पर तिरंगा फहराया । भूख, प्यास, बीमारी की परवाह किये बिना न जाने कितने मोर्चों पर जंगलों, पहाड़ों, दलदली मैदानों को चीरते हुए आगे बढ़ते चले गये । 'जय हिन्द' का नारा लगाते हुए हजारों वीर गति को प्राप्त हुए, किन्तु उनका हौसला कम नहीं हुआ । हे मेरे शहीद दोस्तों ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ।"


मैरिट में
आये
विद्यार्थियों की
पहली पसंद
विमल®
मॉडल
टैस्ट
पेपर्स
परीक्षा में
आने वाले सभी
सम्भावित प्रश्नों एवं उत्तरों
का
सर्वश्रेष्ठ संकलन
अवश्य पढ़िये
कक्षा 8, 9, 10
11 व 12 के लिये
परीक्षा विशेषज्ञ
समिति द्वारा सम्पादित
अरूण बुक कम्पनी,® जयपुर-3